कुटकी की खेती

सामान्य नाम	:	कुटकी
वानस्पतिक नाम	:	पिकरोराइजा कुरो
कुल	:	स्क्रैराफुलेरियेसी
उपयोगी भाग	:	जड़ और प्रकन्द।
सामान्य उपयोग	:	कुटकी प्रतिरोधी, वातहारी, भूखवर्धक, मलेरिया रोधी औषधि है। यह दमा, सर्दी–जुकाम, खून में कमी और पीलिये में भी लाभदायक होती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास हाई एल्टीट्यूड प्लॉन्ट फिजियोलॉजी रिसर्च सेंटर, हेमवती नन्दन बहुगुना गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर हिमाचल प्रदेश

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कुटकी

स्कैराफुलेरियेसी

कुलः स्कैराफुलेरियेसी

- कुटकी छोटा कड़वा, बारहमासी बहुवर्षीय पौधा है।
- तना छोटा, कमजोर तथा रेंगनेवाला सीधा, टहनियों पर फूलवाला और थोड़ा सा बालों वाला होता है।
- पत्तियां 5–10 सेंटीमीटर लंबी और पैनी होती हैं।

जलवायु एवं मिट्टी

- यह पौधा उत्तरी–पश्चिमी ढलानों में 2700–4500 मीटर की ऊँचाई पर नमी वाली रेतीली मिट्टी में विकसित होता है।
- रेतीली धारी वाली मुदुल मिट्टी की परतें इसकी खेती के लिए सबसे उपयुक्त होती है।

रोपण सामग्रीः

- बीज और प्रकंदे / विरोह

नर्सरी विधि

पौध तैयार करनाः

- बीजों को भूमि पर छिटककर अंकुरित किया जाता है।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- एक हेक्टेयर में 1,65,000 अंकुरित बीजों का उत्पादन करने के लिए 1–1.5 किलोग्राम बीजों की आवश्यकता होती है।
- बीजों को 95 प्रतिशत उतरजिविता दर के लिए 24 घंटे के लिए 100 पीपीएम (पार्टस् पर मिलियन), जीए$_3$ के साथ उपचारित किया जाता है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- लगातार हल चलाकर भूमि को समतल किया जाता है।
- खेत को एक सप्ताह सौरीकरण के लिए खुला छोड़ा जाता है।
- पौधा रोपण से कम से कम 15 दिन पहले प्रति हेक्टेयर 6 टन की दर से एफवाईएम भूमि में मिलाया जाता है।

पौधारोपण और अनुकूलतम दूरी

- एक हेक्टयर भूमि पर 20 सेमी X 30 सेमी या 30 सेमी X 30 सेमी की दूरी रखते हुए लगभग 1,10,000 पौधों का प्रत्यारोपण किया जाता है।

अंतर फसल प्रणालीः

- इस पौधे को सौंफ, आलू आदि के साथ उगाया जा सकता है।

संवर्धन विधिः

- प्रत्यारोपण के बाद 5 से 7 दिन के अंतराल में हाथ से निराई करना आवश्यक है।
- उसके बाद एक महीने के अंतराल में निराई के साथ गुड़ाई भी की जाती है।

सिंचाई

- गर्मी के दौरान में वैकल्पिक दिनों में खेत की सिंचाई करनी चाहिए।
- हर समय खेत में पर्याप्त रुप से नमी रखनी चाहिए।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाईः

- इसका जीवन चक्र तीन वर्षों का होता है।
- बीज के पकने में एक वर्ष का समय लगता है।
- ऊपरी हिस्से को सुखाकर जड़ और प्रकन्द को सितम्बर माह में हाथ से खुदाई करके निकाला जाता है।

खेती पश्चात् प्रबन्धनः

- जड़ों और प्रकंदों को छायादार स्थानो में सूखाया जाता है उसके बाद अच्छी तरह से सूखी हुई सामग्री को नमी से बचाने के लिए जूट से बने थैलों में भंडारित किया जाता है।

पैदावारः

- यदि फसल प्रकंदों से तैयार की जाती है तो तीसरे वर्ष में प्रति हेक्टेयर लगभग 1.1 टन सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं।
- यदि फसल बीजों से तैयार की जाती है तो तीसरे वर्ष में प्रति हेक्टेयर 0.6 टन सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं।